

२०८

पञ्चदशविधि

ASHA ARCHIVES

3536

[illegible][illegible]

धुरवधुर्वधुं मूठिनकरुका हा नावमद्यार हासं। खपुं शलंकपाचम
लूकसुहिर्न वामेखदामेरुसं डी श्रीविश्वीरु कालं कययनिद्रवीनरुनेन व
कुरुगाली॥ ७ ॥ कथयी। अययी। ०यी रुऊननिलयदि वदेनयसं एना
मूठुमी। ००० गवयनिसहिर्नमधुलयनरुनासादिं न्यानाकसाखेन
यिकनययूनमकुलरुमसुवेनयावीनरुना। अमदिनअयकलीनेन
वैरुगयाली॥ ८ ॥ केकीलीनरुयकेलीकलसहिर्नरुनवगाननादेन

राजावाययुगा॥लेखनसुख॥क॥अस्मायुरु॥चन्दनादित॥निकालि
२वर्ग॥विलोहदलुयनम॥लक्ष्मीनायेनोत्प्रेयनम॥नेवागीधयनः
म॥ने॥सामरुधवायनम॥नेवकाविष्णुवृद्धविवधकिसदितायनम॥
॥क॥अभिर्विधायनखमतीकूआनोदवोसुद॥णीदुकाविक्रय॥वेव
धर्मयालनमासुग॥खमयखलना॥यधकिकायाअतत्यन॥यधु
कअस्त्रयामीधुखमनाअनमासुग॥॥स॥नकवयधुययोवेक
वनरुयावयुगायाय॥नेक॥अस्मायुरु॥लेखनहाय॥कादीदुद

कोद॥धमकुनडयनयधान॥ने॥अस्मायुरु॥यायु॥सायमकु॥ने॥
कवचायदु॥अवगुधन॥ने॥को॥ने॥नपुगयायवीषट॥
धनमडा॥॥ने॥सिन्दूरखानगयुगा॥ने॥को॥दुदयादिनयुगा
॥गु॥लि॥ने॥यधुवनम॥॥के॥लेखकोयावदुसथागतकुवय॥
मनुकन॥ने॥यायुरु॥यसुहा॥अ॥यवावाहाकाय॥अ॥यादि॥
के॥लेखकोमा॥ने॥ननहायक॥वा॥कु॥मानस्यवर्षवधनाथ॥
शीमस्यनरु॥ने॥नकाय॥म॥वक्रि॥वर्त॥ग॥वलि॥गु॥म॥ह॥स॥य॥द॥

x ३ वगयधुयाधयविश्वरुविश्वकर्मायधिमहि॥नीजीवयथादया

५॥ ॥ मस्तु हायक ॥ यद्युथा नि य नुभासि यूजा हा मादि कर्मणि ।
 उरुत्वा रवद साधवी स मां नृभिर्न सुव । यद्वा (थे व ल य ४४) स्वय
 भवे स्वयं युवा । अगत्वा याग याभय रास्मा अरु व (धो व ध) ॥ ॥ यू
 वं कर्म कता या य यथु क न नि जाय ग सर्व या ये विनिर्मूकं स्व ग्जला क स
 ग कुरु ॥ यथु साय ॥ धन का व भाल क्वा यः मत वि यः य व या (ध) क य
 द थ ॥ ॥ नि यथु क द न विधि ॥ ह्या न न न साः यू च सै क ल्य धाय ॥ न
 स गान रु न सा यी र्थ धाय ॥ ॥ धा न सः द्वा ग धाय । रु सिः भ य धा
 य ॥ भ सः महिष धाय ॥ खाः द क कू ट धाय ॥ ह सः धु म यै वि धाय ॥

रसलित या र व न कुं म क ग्व ७ ॥ अर्ध या ग या ल ख न अं गु ति वा न थो य रं ना ॥
 ॥ ॥ निं ज यी नि ४ थ ना स न स्म र व र य द न (ध) रं न वा मं नु मू र्ति ध्य धी
 व धी स ना थ ४ य ध न ४ रु धि र्ध धा ला क या ला ४ रु वि न्द्रा धाय का न कौ ति द याः
 ४ यि र्ग व स हि मा न न ४ क र या ला था गि (ध) या ग यू का ल ल ल ख य ना ४
 या म म न उ पि व रु ॥ यि व नु द व ता ४ स र्व स न द्वा ध्य वि ना य का ४ या गि न्य ४
 य या ला धुं म म द रु द्य व कि ता ॥ अ वि ना सा र व द रु अ क नो म न व भ व
 न । प्रा ग सौ क र य ना कि ना क धी स र्व सै म्य द धा नै न म ४ धी ना था य
 नै न म ४ धी सि धि ना था य । नै न म ४ धी क क न ना था य ॥ ॥ ह्या य ॥

संस्कृत
मंत्र



दक्षवलि

भारतीस्यधन



वलि



चिनवलि



अथवा

